International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

उत्तराखंड की आर्थिक प्रगति में पर्यटन क्षेत्रों की भूमिका एवं स्वरोज़गार के अवसर

गगन दीप सिंह[1], डॉ. दिनेश जोशी[2]

[1]शोधार्थी(वाणिज्य), इंदिरा प्रियदर्शिनी राजकीय महिला स्नातकोत्तर वाणिज्य महाविद्यालय हल्द्वानी (नैनीताल)
[2]विभागाध्यक्ष(वाणिज्य), इंदिरा प्रियदर्शिनी राजकीय महिला स्नातकोत्तर वाणिज्य महाविद्यालय हल्द्वानी (नैनीताल)

सार (संक्षेप) :-
उत्तराखंड की आर्थिक प्रगति में पर्यटन क्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह रोजगार सृजन, आय सृजन और राज्य के समग्र विकास में योगदान देता है। उत्तराखंड की प्राकृतिक सुंदरता और पर्यटक आकर्षण बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है।
पर्यटन क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण लाभ इसके द्वारा प्रदान किये जाने वाले स्वरोजगार के अवसर हैं। स्थानीय निवासी होटल, रेस्तरां, साहसिक खेल गतिविधियाँ और टूर गाइड सेवाएँ जैसे अपने स्वयं के व्यवसाय शुरू कर सकते हैं। इससे न केवल उनके लिए रोजगार पैदा होता है बल्कि स्थानीय समुदाय के लिए भी आय उत्पन्न होती है। इसके अलावा, पर्यटन उद्योग सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण को बढ़ावा देता है और पारंपरिक कला, शिल्प और स्थानीय व्यंजनों के विकास को प्रोत्साहित करता है। यह स्थानीय कारीगरों और शिल्पकारों के लिए आजीविका के अवसर प्रदान करते हुए उत्तराखंड की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में मदद करता है। कुल मिलाकर, उत्तराखंड में पर्यटन क्षेत्र रोजगार पैदा करने, आय पैदा करने और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण को बढ़ावा देकर राज्य की आर्थिक प्रगति पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। उत्तराखंड के समग्र विकास और समृद्धि में इसका महत्वपूर्ण योगदान है।
पर्यटन उद्योग दुनिया भर के देशों और क्षेत्रों में आर्थिक वृद्धि और सामाजिक विकास के रूप में उभरा है। यह शोध पत्र उत्तराखंड में पर्यटन उद्योग के विकास के सामने मौजूद संभावनाओं और चुनौतियों के संदर्भ में पर्यटन की भूमिका पर केंद्रित है। उत्तराखंड में पर्यटन द्वारा आर्थिक विकास को परिभाषित करने के लिए इस अध्ययन में वर्णनात्मक और कथात्मक दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है। क्षेत्र में पर्यटन उद्योग के क्रमिक विकास के लिए कुछ चुनौतियाँ हैं जिन पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है और साथ ही संबंधित हितधारकों द्वारा अवसरों को भुनाने की आवश्यकता है। राज्य में लगातार हो रहे पलायन की रोकथाम हेतु योजनाएँ व स्वरोज़गार को अपनाने की ओर कदम बड़ रहे हैं तथा उन्हें इसी तरह आगे बढ़ते रहना अति आवश्यक है।

KEYWORDS: उत्तराखंड राज्य, आर्थिक प्रगति, पर्यटन झेत्र, स्वरोज़गार

परिचय :-

उत्तराखंड, जिसे "देवभूमि" या देवताओं की भूमि के रूप में जाना जाता है, भारत के पश्चिमी हिमालय में

स्थित एक राज्य है। इसके मनमोहक पहाड़, गहरी नदियाँ और प्राकृतिक सुंदरता ने इसे एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल बना दिया है। प्राकृतिक एवं धार्मिक पर्यटन स्थलों की दृष्टि से उत्तराखण्ड एक समृद्ध राज्य है। पर्यटन राज्य के आय तथा रोजगार का एक प्रमुख साधन बनता जा रहा है। अतः राज्य सरकार इस क्षेत्र के सुनियोजित एवं तीव्र विकास के लिए बहुआयामी पर्यटन नीति बनाकर व्यापक कार्ययोजना एवं संस्थागत ढांचे की व्यवस्था कर रही है। राज्य के गठन के समय गठित अंतरिम सरकार ने 26 अप्रैल 2001 को उत्तराखण्ड पर्यटन नीति की घोषणा की। इस नीति के मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं -

- उत्तराखण्ड को पर्यटन प्रदेश के रूप में विकसित करना तथा यहां की सांस्कृतिक विविधताओं एवं सम्भावनाओं को उजागर करना।
- पर्यटन को पर्यावरण के अनुकूल एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के अनुरूप बनाने के लिए इको टूरिज्म को प्रोत्साहित करना।
- पर्यटकों को उनकी मूल अभिरुचि एवं आर्थिक क्षमता के अनुरूप सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों की सहभागिता बढ़ाना।
- पर्यटन स्थलों का राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक प्रचार- प्रसार करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना।
- पर्यटन हेतु विभिन्न स्रोतों से पूंजी निवेश में वृद्धि का प्रयास करना।
- मनोरंजन पर्यटन केसाथ-साथ संस्थागत एवं साहसिक पर्यटन का विकास करना।
- पर्यटन के त्वरित, समग्र एवं संतुलित विकास हेतु वर्तमान विभागीय ढांचे में आमूल-चूल परिवर्तन के साथ एक अधिनियम द्वारा 'उत्तराखण्ड पर्यटन विकास बोर्ड' का गठन करना। इस बोर्ड में पर्यटन क्षेत्र के पांच विशेषज्ञ होंगे, जो सरकार को पर्यटन संबंधी मामलों में सलाह एवं मार्गदर्शन देंगे। बोर्ड में तीन निदेशक होंगे जो परियोजना प्रतिपादन, वित्त एवं निवेश तथा प्रचार एवं विपणन का कार्यभार संभालेंगे। यह बोर्ड राज्य में पर्यटन से संबंधित विषयों पर सुझाव देने वाला सर्वोच्च उपक्रम होगा। इसके अध्यक्ष पर्यटन मंत्री, उपाध्यक्ष पर्यटन विकास आयुक्त एवं सचिव मुख्य कार्यकारी अधिकारी होंगे।

उत्तराखंड में पर्यटन क्षेत्र और स्वरोजगार के अवसरों ने इसकी आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पर्यटन में निम्नलिखित गतिविधियाँ शामिल हैं अवकाश, व्यवसाय या अन्य प्रयोजनों के लिए अपने सामान्य वातावरण से बाहर स्थानों पर रहने व घूमने वाले व्यक्ति का सामाजिक और शारीरिक विकास। उत्तराखंड में पर्यटन आर्थिक विकास के पीछे एक प्रमुख प्रेरक शक्ति रहा है। 2020-2021 के आंकड़ों के मुताबिक, उत्तराखंड में पर्यटन से जुड़े कारोबार से लगभग 24,000 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ। इस राजस्व का अधिकांश हिस्सा लोकप्रिय पर्यटन स्थलों, प्राकृतिक पार्कों और धार्मिक तीर्थ स्थलों से आता है। नैनीताल, मसूरी, ऋषिकेश, हरिद्वार, केदारनाथ, बद्रीनाथ और जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क राज्य के प्रमुख पर्यटक आकर्षणों में से हैं। राजस्व उत्पन्न करने के अलावा, पर्यटन ने स्थानीय आबादी के लिए रोजगार के कई अवसर भी पैदा किए हैं। उत्तराखंड में पर्यटन क्षेत्र बड़ी संख्या में लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करता है। होटल, रेस्तरां, ट्रैवल एजेंसियां, साहसिक खेल और हस्तशिल्प उद्योग उन विविध प्रकार के व्यवसायों के कुछ उदाहरण हैं जो पर्यटन के कारण फले-फूले हैं। इससे न केवल स्थानीय समुदायों की आय में वृद्धि हुई है बल्कि राज्य का समग्र सामाजिक-आर्थिक विकास भी हुआ है। पर्यटन क्षेत्र के साथ-साथ स्वरोजगार के अवसरों ने भी उत्तराखंड की आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राज्य सरकार ने उद्यमिता एवं

स्वरोजगार को बढ़ावा देने की पहल की है। व्यक्तियों को अपना स्वयं का व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न योजनाएँ और कार्यक्रम लागू किए गए हैं। इन पहलों से लघु उद्योगों, कृषि आधारित उद्यमों और हस्तशिल्प के लिए अनुकूल माहौल बनाने में मदद मिली है, जो राज्य की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था पर पर्यटन और स्वरोजगार का प्रभाव सिर्फ राजस्व सृजन और रोजगार सृजन से परे है। इसने बुनियादी ढांचे के विकास, बेहतर कनेक्टिविटी आदि में भी योगदान दिया है। उत्तराखंड इच्छुक उद्यमियों के लिए स्वरोजगार के ढेर सारे अवसर प्रदान करता है।

साहित्य की समीक्षा :

उपलब्ध साहित्य के अनुसार विभिन्न पर्यटन स्थल छवि अध्ययनों का विवरण निम्नानुसार प्रस्तुत किया गया है:

क्रॉम्पटन (1979) ने आनंददायक छुट्टियों के नौ उद्देश्यों की पहचान की, जिन्होंने गंतव्य के चयन को प्रभावित किया-

कथित सांसारिक वातावरण से बचना, स्वयं की खोज और मूल्यांकन, विश्राम, प्रतिष्ठा, प्रतिगमन, रिश्तेदारी संबंधों में वृद्धि, सामाजिक संपर्क की सुविधा, नवीनता और शिक्षा। गन (1985) ने दावा किया कि गंतव्य छवियां कार्बनिक छवि से शुरू होने वाली एक निरंतरता पर गिरती हैं, उसके बाद प्रेरित छवि और जटिल छवि पर समाप्त होती है।

गन (1985) के वैचारिक सिद्धांत को (पीसी फ़ेके, जेएल क्रॉम्पटन, 1991) द्वारा मान्य किया गया था जब सुसंगत गैर-आगंतुकों, पहली बार आने वालों और पुनरावर्तकों के बीच छवियों में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। मोवेन, जे.सी. और माइनर, एम. (1998) ने अपनी पुस्तक में सुझाव दिया कि छवि एक एकल तत्व नहीं है, बल्कि एक मानसिक संरचना है, जो कई नोड्स और संघों द्वारा निर्मित है। एक स्कीमा को एक काल्पनिक संज्ञानात्मक संरचना माना जाता था जो सूचना की निचली स्तर की इकाइयों को उच्च स्तर की सामंजस्यपूर्ण और सार्थक इकाइयों में एकीकृत करती है जिन्हें नोड्स कहा जाता है, जो मूलभूत बिल्डिंग ब्लॉक के रूप में एक मानसिक नेटवर्क बनाते हैं।

अहमद (1991) के अनुसार, ठहरने की अवधि और निवास स्थान ने पर्यटकों की छवि को काफी प्रभावित किया। बुहलिस (2000) ने देखा कि अधिकांश गंतव्यों में निम्नलिखित घटकों का मूल शामिल है:: आकर्षण (प्राकृतिक, मानव निर्मित, कृत्रिम, उद्देश्य से निर्मित, विरासत, विशेष कार्यक्रम), पहुंच (मार्गों, टर्मिनलों और वाहनों से युक्त संपूर्ण परिवहन प्रणाली), सुविधाएं (आवास और खानपान सुविधाएं, खुदरा बिक्री, अन्य पर्यटक सेवा), गतिविधियां (गंतव्य पर उपलब्ध सभी गतिविधियां और उपभोक्ता अपने प्रवास के दौरान क्या करेंगे)

दूसरी ओर, सांस्कृतिक दूरी एक ऐसा कारक थी जिसने किसी पर्यटन स्थल पर जाने से पहले उसकी कथित छवि को कम से कम आंशिक रूप से प्रभावित किया। विशेष रूप से, व्यक्तियों को उन पर्यटन स्थलों पर अधिक भरोसा हो सकता है जिनकी संस्कृतियाँ उनके अपने सांस्कृतिक मूल्यों के समान हैं। एनरिक बिग्ने अल्केनिज़, इसाबेल सांचेज़ गार्सिया, सिल्विया सैन्ज़ ब्लास (2009) ने अपने अध्ययन में दोहरे दृष्टिकोण से एक गंतव्य की छवि के संज्ञानात्मक घटक का विश्लेषण किया। सबसे पहले, उन्होंने सातत्य पर तीन स्थितियों को रखकर इसकी संरचना का अध्ययन किया: कार्यात्मक, मिश्रित और मनोवैज्ञानिक, जिनका विश्लेषण

पुष्टिकारक कारक विश्लेषण का उपयोग करके किया गया था। दूसरे, उन्होंने संरचनात्मक समीकरण विश्लेषण का उपयोग करके पर्यटकों की गंतव्य की समग्र छवि और उनके भविष्य के व्यवहार के इरादों पर इन घटकों के प्रभाव का अध्ययन किया। परिणामों से पता चला कि मनोवैज्ञानिक और कार्यात्मक घटकों ने गंतव्य की समग्र छवि पर सबसे अधिक प्रभाव डाला। समग्र छवि भविष्य के व्यवहार के इरादों को लगातार प्रभावित करती पाई गई, जबकि कार्यात्मक घटक पुनरीक्षण इरादे के लिए प्रासंगिक था और मनोवैज्ञानिक घटक सिफारिश करने के इरादे के लिए प्रासंगिक था। डोलोरेस एम. फ्रियास, मिगुएल ए. रोड्रिग्ज, जे. अल्बर्टो कास्टानेडा, कारमेन एम. सबियोट और दिमित्रियोस बुहलिस (2011 के अध्ययन से पता चला है कि पर्यटकों के बीच किसी गंतव्य की यात्रा-पूर्व छवि का निर्माण, उनके द्वारा उपयोग किए गए सूचना स्रोतों के आधार पर, द्वारा नियंत्रित किया गया था) उनकी राष्ट्रीय संस्कृतियों में अनिश्चितता-परिहार का स्तर, यानी फ्रांस, बेल्जियम या इटली जैसी उच्च अनिश्चितता-परिहार संस्कृतियों के पर्यटकों ने ट्रैवल एजेंसी और इंटरनेट दोनों का उपयोग करने की तुलना में केवल ट्रैवल एजेंसी का उपयोग करने के बाद अधिक अनुकूल गंतव्य छवियों को रखा। दूसरी ओर ब्रिटिश जैसी कम अनिश्चितता से बचने वाली संस्कृतियों से आने वाले पर्यटक, ट्रैवल एजेंसी के अलावा इंटरनेट के उपयोग से प्रभावित होने में विफल रहे। उन पर्यटकों द्वारा रखी गई छवि सूचना स्रोत से प्रभावित नहीं हुई। महादजीराह मोहम्मद, अहमद रुसदी अब्दुल्ला और सफीक मोखलिस (2012) के निष्कर्षों से पता चला है कि यदि विदेशी पर्यटकों को अनुकूल गंतव्य छवि मिलती है,

सुब्रमण्यम (2010) ने अपने अध्ययन में रोजगार सृजन में पर्यटन की विकासात्मक क्षमता और अर्थव्यवस्था पर प्रभाव की जांच की और पाया कि यात्रा और पर्यटन उद्योग विविध आबादी के लिए विविध नौकरियां पैदा करता है। इसके अलावा उन्होंने पाया कि पर्यटन उद्योग में लगे स्थानीय लोगों को प्रशिक्षण प्रदान करने की आवश्यकता है। शर्मा (2012) ने सुझाव दिया कि होटल और पर्यटन उद्योग हाल के वर्षों में तेजी से बढ़ रहा है, जिससे भारत के कई हिस्सों में विदेशी और घरेलू पर्यटकों के माध्यम से भारी राजस्व प्राप्त हो रहा है, जो इसे दुनिया का सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थल बनाता है। पर्यटन सबसे तेजी से बढ़ने वाला सेवा उद्योग है (डब्ल्यूटीटीसी, 2019) जो मुख्य रूप से पर्यटकों को प्रदान की जाने वाली सेवा और सुविधाओं पर निर्भर करता है। कुमार (2012) ने सुझाव दिया कि पर्यटकों के लिए सुविधाएं पर्यटकों को आकर्षित करने वाला प्रमुख तत्व है और इस तरह से देश को दीर्घकालिक राजस्व उत्पन्न करने में मदद मिलती है। मीर (2014) ने विस्तार से बताया कि भारतीय यात्रा और पर्यटन उद्योग एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो कुशल और अकुशल श्रम शक्ति दोनों के लिए रोजगार पैदा करके हमारी अर्थव्यवस्था के कई क्षेत्रों के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और इस तरह पर्यटन सामाजिक विकास में एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक है। -भारत में आर्थिक विकास। कौर (2016) ने भारतीय अर्थव्यवस्था पर पर्यटन उद्योग के योगदान का विश्लेषण किया और निष्कर्ष निकाला कि पर्यटन का नकारात्मक और सकारात्मक दोनों प्रभाव पड़ता है और उद्योग में यात्रा उद्योग बहुत आशाजनक है क्योंकि इसमें अर्थव्यवस्था में सबसे बड़े रोजगार पैदा करने वाले क्षेत्र में से एक बनने की क्षमता है। गोयल (2018) ने अध्ययन में पाया कि यात्रा और पर्यटन एक महत्वपूर्ण है। अर्थव्यवस्था में राजस्व और रोजगार का स्रोत और इसके लिए यात्रा और आतिथ्य उद्योग को

बढ़ावा देने के लिए बुनियादी ढांचे के विकास की काफी गुंजाइश है। डब्ल्यूटीटीसी (2019) ने कहा कि पर्यटन ने वर्ष 2019 में 10 में से 1 नौकरियां पैदा कीं।
उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि राज्य सरकार का लक्ष्य होमस्टे के माध्यम से राज्य में अर्थव्यवस्था और पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देना है। मुख्यमंत्री आज टिहरी गढ़वाल जिले में बोल रहे थे जहां उन्होंने विभिन्न विकासात्मक योजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया।

जिले के छाम क्षेत्र में लोगों को संबोधित करते हुए, धामी ने कहा, "हमारी सरकार होमस्टे के माध्यम से उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था और पर्यटन को बढ़ावा दे रही है। होमस्टे तैयार किए जाएंगे = अब तक 3,600 होमस्टे पंजीकृत हैं, जिससे 8,000 लोगों को रोजगार मिलेगा।"
मुख्यमंत्री ने कहा, "उन सभी लोगों ने, जिन्होंने ग्रामोदय और उत्तराखंड के विकास के लिए चिंता व्यक्त की है...हम बोधिसत्व कार्यक्रम के रूप में नई कार्य योजनाएं बना रहे हैं।" धामी ने कहा कि राज्य सरकार मुख्यमंत्री नैनो उद्यम और मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के माध्यम से स्वरोजगार प्रदान कर रही है। "हमारी सरकार ने स्वरोजगार के लिए बैंकों से ऋण लेने की प्रक्रिया को सरल बनाया है।"

उन्होंने कहा, "स्वस्थ युवा, स्वस्थ उत्तराखंड और नई खेल नीति के साथ हम युवाओं के लिए बेहतरीन योजनाएं लेकर आ रहे हैं। हम राज्य के युवाओं के विकास के लिए प्रतिबद्ध हैं।" धामी ने कहा कि राज्य सरकार मुख्यमंत्री नैनो उद्यम और मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के माध्यम से स्वरोजगार प्रदान कर रही है। "हमारी सरकार ने स्वरोजगार के लिए बैंकों से ऋण लेने की प्रक्रिया को सरल बनाया है।"

उन्होंने कहा, "स्वस्थ युवा, स्वस्थ उत्तराखंड और नई खेल नीति के साथ हम युवाओं के लिए बेहतरीन योजनाएं लेकर आ रहे हैं। हम राज्य के युवाओं के विकास के लिए प्रतिबद्ध हैं।"

शोध-विधि :-
वर्तमान अध्ययन उत्तराखण्ड की आर्थिक प्रगति में पर्यटन की भूमिका को परिभाषित करने के लिए एक वर्णनात्मक दृष्टिकोण अपनाता है। यह पुस्तकों, अनुसंधान पत्रिकाओं और डॉक्टरेट थीसिस से आवश्यक डेटा एकत्र करने के लिए द्वितीयक स्रोत का उपयोग करता है। राजस्व सृजन के साथ-साथ रोजगार सृजन दोनों में अपने विशाल योगदान को देखते हुए पर्यटन उत्तराखंड में एक महत्वपूर्ण गतिविधि है। राज्य टीएसए के अनुसार, पर्यटन का राज्य के सकल मूल्य वर्धित में सीधे तौर पर 2.96 प्रतिशत और राज्य के रोजगार में 11.8 प्रतिशत का योगदान होने का अनुमान है।

समस्याएं एवं चुनौतियाँ:-

उत्तराखंड की आर्थिक प्रगति में पर्यटन का योगदान तो है। उत्तराखंड की सुंदरता और पर्यटन स्थलों की वजह से यहां पर बहुत सारे पर्यटक आते हैं, जहां स्थानीय लोगों को रोजगार का अवसर मिलता है। पर्यटन उद्योग में काम करने वाले लोगों के लिए होटल, रेस्तरां, परिवहन और साहसिक खेल जैसे व्यवसाय के अवसर होते हैं।

परंतु, कुछ समस्याएं भी हैं। उत्तराखंड के अल्पाइन क्षेत्र में पारिस्थितिक संतुलन और पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान रखना जरूरी है। भीड़भाड़ और अनियोजित विकास से पर्यावरण और संस्कृति पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। इसके साथ ही, पर्यटन की मौसमी प्रकृति से लोगों को साल भर का रोजगार नहीं मिल पाता। बुनियादी ढांचे, कनेक्टिविटी और बुनियादी सुविधाओं की कमी भी कुछ क्षेत्रों में है।

सरकार और स्थायी प्रशासन ने इस पर ध्यान दिया है और सतत पर्यटन विकास के लिए कदम उठाए हैं। यहां पर स्वरोजगार के अवसर और पर्यटन संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाए जाते हैं। इस स्थान पर लोगों को रोजगार और आर्थिक उन्नति का मौका मिलता है।

जब उत्तराखंड की आर्थिक प्रगति में पर्यटन क्षेत्रों की भूमिका और स्वरोजगार के अवसरों की बात आती है, तो कुछ चुनौतियाँ हैं जिनका पता लगाया जा सकता है। कुछ संभावित समस्याओं में शामिल हो सकते हैं:

1. **सीमित बुनियादी ढांचे का विकास:** यह जांच करना कि परिवहन और आवास सुविधाओं जैसे उचित बुनियादी ढांचे की कमी, उत्तराखंड में पर्यटन और स्वरोजगार के अवसरों के विकास में कैसे बाधा डालती है।
2. **पर्यटन की मौसमी प्रकृति:** यह जांच करना कि पर्यटन की मौसमी प्रकृति स्वरोजगार के अवसरों की स्थिरता और उत्तराखंड की समग्र आर्थिक प्रगति को कैसे प्रभावित करती है।
3. **पर्यावरणीय स्थिरता:** पर्यावरण पर पर्यटन के प्रभाव की खोज करना और पर्यावरण संरक्षण के साथ आर्थिक विकास को संतुलित करने वाली टिकाऊ पर्यटन प्रथाओं को बढ़ावा देने के तरीकों की पहचान करना।

4. **कौशल विकास और प्रशिक्षण:** पर्यटन क्षेत्र में व्यक्तियों की रोजगार क्षमता बढ़ाने और स्वरोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए कौशल विकास कार्यक्रमों की उपलब्धता और प्रभावशीलता का विश्लेषण करना।

ये तो बस कुछ उदाहरण हैं, लेकिन विचार करने के लिए और भी कई पहलू हैं।

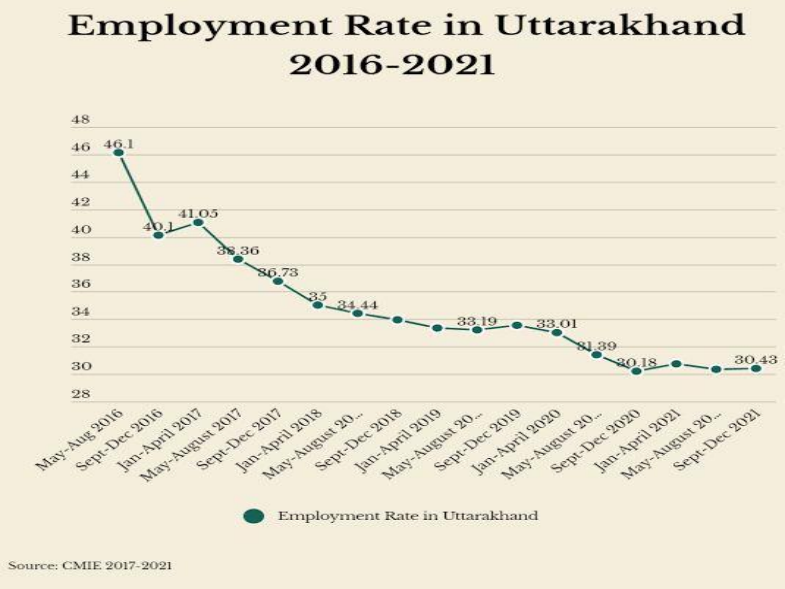

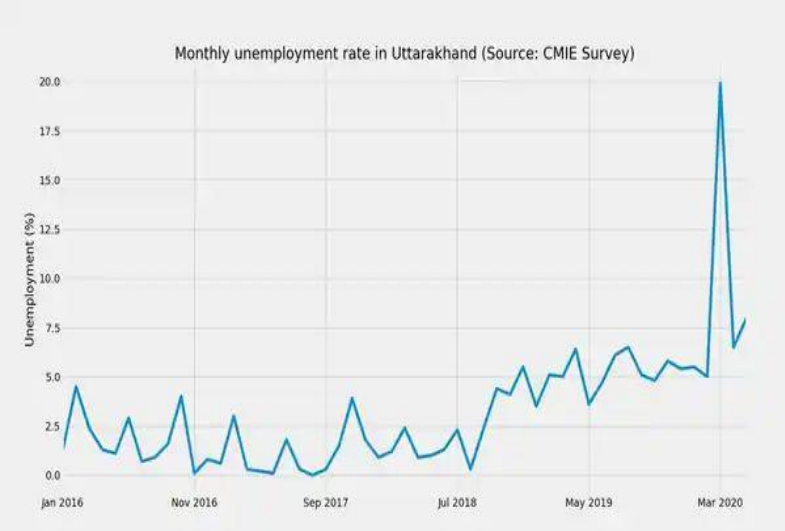

अध्ययन का उद्देश्य:-

1. उत्तराखण्ड की आर्थिक प्रगति में पर्यटन उद्योग की भूमिका का आकलन करना।
2. क्षेत्र में पर्यटन विकास के अवसरों की जांच करना।
3. उत्तराखण्ड में पर्यटन को बढ़ाने एवं विकास हेतु उपाय सुझाना।
4. उत्तराखंड में पर्यटकों के आगमन के संदर्भ में पर्यटन के विकास की जांच करना।
5. पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक बुनियादी सुविधाओं का गंभीरतापूर्वक मूल्यांकन करना।

6. ग्यारहवीं और बारहवीं पंचवर्षीय योजनाओं और पर्यटन क्षेत्र के लिए बजट में राज्य सरकार की प्रतिक्रिया की जांच करना।
7. इस संबंध में कुछ नीतिगत सुझाव देना।
8. उत्तराखंड में व्याप्त बेरोज़गारी को समाप्त करने हेतु उपाय सुझाना।
9. लगातार हो रहे पलायन को रोकना।
10. स्वरोज़गार के माध्यम से आर्थिक विकास की जाँच करना।
11. स्वरोज़गार की ओर अग्रसर उत्तराखंड वासियों की मनोस्थिति का अध्ययन।
12. पर्यटन द्वारा स्वरोज़गार के अवसरों की जाँच करना।

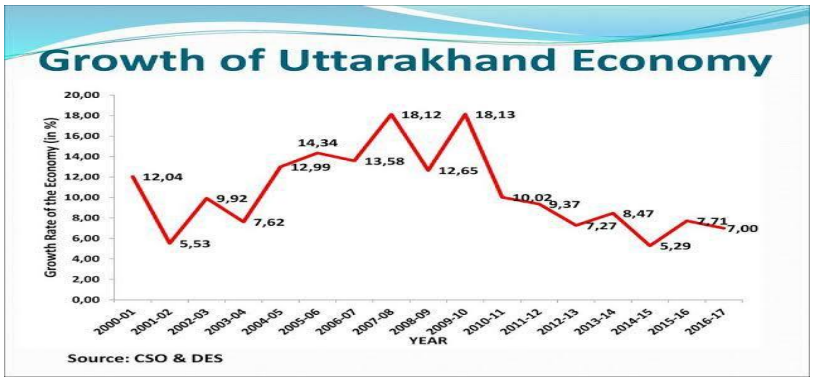

राज्य में पर्यटन विविधता:-

तीर्थयात्रा: तीर्थयात्रा पारंपरिक रूप से राज्य में पर्यटन का एक प्रमुख क्षेत्र रही है। राज्य में विभिन्न धर्मों के महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान स्थित हैं। इनमें बद्रीनाथ, केदारनाथ, यमुनोत्री, गंगोत्री, हरिद्वार, हेमकुंड लोकपाल, नानकमत्ता, मीठा-रीठा साहिब, पिरान कलियार, पुण्यगिरि कुछ सबसे प्रसिद्ध हैं। कई महत्वपूर्ण धार्मिक यात्राएँ, जिनमें नंदा देवी राज जात और कैलाश मानसरोवर यात्रा सबसे लोकप्रिय हैं, भी राज्य में होती हैं। पंचबद्री, पंचकेदार, पंचप्रयाग, पाताल भुवनेश्वर आदि कई अन्य तीर्थ स्थान हैं, जिन्हें प्राथमिकता के आधार पर विकसित करने की आवश्यकता है।

सांस्कृतिक पर्यटन: राज्य में एक समृद्ध और जीवंत सांस्कृतिक विरासत है। झंडा मेला (देहरादून), सुरकंडा देवी मेला (टिहरी), माघ मेला जैसे असंख्य स्थानीय मेले और त्यौहार हैं

(उत्तरकाशी), नंदा देवी मेला (नैनीताल), चैती मेला (उधम सिंह नगर), पूर्णागिरि मेला (चंपावत), पिरान कलियर मेला (हरिद्वार), जोल्जीवी मेला (पिथौरागढ़) और उत्तरायणी मेला (बागेश्वर); जो राज्य में सांस्कृतिक पर्यटन की अपार संभावनाओं का द्योतक हैं।

प्राकृतिक सौंदर्य: पहाड़ों की रानी, मसूरी, भारत का झील जिला -नैनीताल, कौसानी, पौडी, लैंसडाउन, रानीखेत, अल्मोडा, पिथौरागढ, मुनस्यारी और बिनसर जैसे कई आकर्षक पर्यटन स्थल राज्य का हिस्सा हैं।

साहसिक पर्यटन: राज्य साहसिक खेलों के लिए स्वर्ग है। पर्वतारोहण (भागीरथी, चौखम्बा, नंदा देवी, कामेत, पिंडारी, सहस्त्रताल, मिलम, कफनी, खतलिंग, गौमुख), ट्रैकिंग, स्कीइंग (औली, दयारा बुग्याल, मुनस्यारी, मुंडाली), स्केटिंग, जल खेल (सभी में) से लेकर विशाल विविधता राज्य में झीलों और नदियों से लेकर हैंग ग्लाइडिंग,

पैरा ग्लाइडिंग (पिथौरागढ़, जॉली ग्रांट, पौडी) जैसे हवाई खेल राज्य को न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर में साहसिक खेलों के लिए सबसे आकर्षक स्थलों में से एक बनाते हैं।

वन्यजीव पर्यटन: विश्व प्रसिद्ध कॉर्बेट नेशनल पार्क के साथ, राज्य में वन्यजीव पर्यटन के लिए कई अन्य लुभावने स्थल हैं। इनमें राजाजी राष्ट्रीय उद्यान, गोविंद पशु विहार, आसन बैराज, चिल्ला और सप्तऋषि आश्रम शामिल हैं, अंतिम चार पक्षी प्रेमियों के लिए आनंददायक हैं।

इको-पर्यटन: राज्य में वनस्पतियों और जीवों की दुर्लभ विविधता है। यह इसे इको-पर्यटन परियोजनाओं और जंगल सफारी, पहाड़ और जंगल के रास्तों पर ट्रैकिंग, प्रकृति की सैर, महाशीर और अन्य मछली प्रजातियों के लिए मछली पकड़ने और छोड़ने जैसी गतिविधियों के विकास के लिए एक आदर्श क्षेत्र बनाता है। इन सभी गतिविधियों को इस तरीके से संचालित किया जाना चाहिए जिससे पर्यावरण के बारे में जागरूकता बढ़े और नाजुक पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में मदद मिले।

मनोरंजन और आराम पर्यटन: स्वच्छ, ताज़ा और स्फूर्तिदायक वातावरण राज्य को आराम करने और आराम करने के लिए एक पसंदीदा स्थान बनाता है। मसूरी और नैनीताल में आधुनिक सुविधाओं से लेकर इसकी बर्फ से ढकी चोटियों, नदियों और जंगलों की अछूती, प्राचीन सुंदरता तक, राज्य वह सब कुछ प्रदान करता है जो एक पर्यटक मनोरंजन और आराम के लिए चाह सकता है।

(घोष, 1998)1 द्वारा परिभाषित पर्यटन का महत्व अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की प्रमुख वस्तुओं में से एक है। पर्यटन उद्योग सकल राजस्व और विदेशी मुद्रा आय अर्जित करता है, आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए यह राष्ट्रीय स्तर पर विदेशी मुद्रा का जनक है और वैश्विक अर्थव्यवस्था में सबसे तेजी से बढ़ने वाला उद्योग भी है।

पर्यटन स्वरोजगार का माध्यम बन सके इसके लिए उत्तराखंड पर्यटन विकास परिषद निशुल्क प्रशिक्षण दे रहा है। मार्च तक चार हजार से ज्यादा को प्रशिक्षण का मौका मिलेगा।प्रदेश के 3010 लोगों के लिए पर्यटन को रोजी-रोटी बनाने के मकसद उत्तराखंड पर्यटन विकास परिषद ने प्रशिक्षण दिया है। मार्च तक चार हजार को प्रशिक्षण देने की योजना है। सैलानियों को राज्य की धरोहर, पुरातत्व, इतिहास, संस्कृति से रूबरू कराने के लिए पर्यटन विभाग ने केंद्रीय परिषद टीएचएससी के साथ प्रशिक्षण की शुरुआत की।इसके तहत ऋषिकेश, गंगोलीहाट, धारचूला, बड़कोट, रामनगर, कैंचीधाम, रुड़की, मुकतेश्वर, लोहाघाट, कोटद्वार,

काशीपुर, देवप्रयाग, रानीखेत, द्वाराहाट, अल्मोड़ा, हर्षिल, चकराता, नानकमत्ता, मुनस्यारी, बेरीनाग, मोरी, सोमेश्वर, हनोल, लैंसडौन में 730 हेरिटेज टूर गाइड प्रशिक्षित किए गए। देहरादून, ऋषिकेश, कोटद्वार, नैनीताल, अल्मोड़ा, काठगोदाम, टनकपुर में 500 टैक्सी चालकों को प्रशिक्षित किया गया। चारधाम यात्रा मार्ग पर 1280 गेस्ट हाउस केयर टेकर, भोजनालय के मालिक, सर्वर और क्लीनर, कोमी शेफ को प्रशिक्षित किया गया। 500 नेचर गाइड को मसूरी, नैनीताल, नानकमत्ता, देहरादून, बिनसर, हरिद्वार, पौड़ी, रुद्रप्रयाग, बागेश्वर, लोहाघाट, मुनस्यारी में प्रशिक्षित किया गया। आगामी मार्च तक विभिन्न पर्यटन स्थलों पर 270 हेरिटेज टूर गाइडों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। 720 गेस्ट हाउस केयरटेकर, चारधाम यात्रा मार्ग में भोजनालय के मालिक, सर्वर और क्लीनर, कोमी शेफ को भी प्रशिक्षित किया जाएगा। अपर निदेशक पूनम चंद ने बताया कि प्रशिक्षण पाने वालों को रोजगार भी मिलने लगा है। लैंसडौन की होटल एसोसिएशन ने रोटेशन के आधार पर ऐसे लोगों को रखने का निर्णय लिया है।

उत्तराखंड आने वाले लगभग 58.2 प्रतिशत विदेशी पर्यटकों की यात्रा का उद्देश्य छुट्टियाँ/दर्शनीय स्थल देखना था। इसके अलावा, लगभग 21.9 प्रतिशत ने स्वास्थ्य, योग आदि के प्रयोजनों के लिए दौरा किया। इन दोनों समूहों को मिलाकर उत्तराखंड आने वाले सभी विदेशी पर्यटकों में से 80 प्रतिशत से अधिक थे।

तालिका-1: यात्रा के प्रयोजन के आधार पर विदेशी पर्यटकों का प्रतिशत वितरण

उद्देश्य	संख्या	प्रतिशत
छुट्टियाँ/दर्शनीय स्थल देखना	117	58.2
व्यवसाय/सम्मेलन/बैठक	21	10.4
शिक्षा	14	7.0
स्वास्थ्य/योग, आदि	44	21.9
तीर्थयात्रा/धार्मिक समारोह	39	19.4
कुल	235	116.9

नोट: एकाधिक प्रतिक्रियाओं के कारण प्रतिशत 100 तक नहीं जुड़ते हैं। 201 पर्यटकों से 235 प्रतिक्रियाएँ मिलीं।

छुट्टियों/दर्शनीय स्थलों को देखने वाले पर्यटकों के मामले में, आकर्षण का मुख्य स्रोत 59 प्रतिशत के लिए प्राकृतिक सुंदरता, 52.1 प्रतिशत के लिए आध्यात्मिक केंद्र, 51.3 प्रतिशत के लिए ट्रैकिंग, 16.2 प्रतिशत के लिए वन्य जीवन और प्रकृति के रास्ते और 14.5 प्रतिशत पर्यटकों के लिए पहाड़ी रिसॉर्ट थे। आकर्षण के स्रोत के अनुसार अवकाश पर्यटकों का प्रतिशत वितरण तालिका-2 में दिया गया है।

तालिका-2: आकर्षण के स्रोत के आधार पर पर्यटकों का प्रतिशत वितरण

आकर्षण का स्रोत	संख्या	प्रतिशत
नैसर्गिक सौंदर्य	69	59.0

पहाड़ी सैरगाह	17	14.5
वन्य जीवन और प्रकृति पथ	19	16.2
रिवर राफ्टिंग	04	3.4
ट्रैकिंग	60	51.3
आध्यात्मिक केंद्र	61	52.1
कुल	230	196.5

नोट: एकाधिक प्रतिक्रियाओं के कारण प्रतिशत 100 तक नहीं जुड़ते हैं। 117 पर्यटकों से 232 प्रतिक्रियाएँ मिलीं।

उत्तराखंड के बारे में जानकारी का मुख्य स्रोत 40.3 प्रतिशत पर्यटकों के लिए यात्रा पुस्तकें थीं, इसके बाद 37.8 प्रतिशत के मामले में दोस्तों और रिश्तेदारों से मौखिक जानकारी मिली। जानकारी के अन्य प्रमुख स्रोत वेबसाइटें (28.9%), यात्रा पत्रिकाएँ (21.4%), टूर ऑपरेटर (14.9%), इलेक्ट्रॉनिक्स मीडिया में विज्ञापन (9.4%) और प्रिंट मीडिया में विज्ञापन (9.0%) थे। सूचना के स्रोत द्वारा पर्यटकों का वितरण तालिका-3 में दिया गया है।

तालिका-3: सूचना के स्रोत के आधार पर पर्यटकों का प्रतिशत वितरण

स्रोत	**संख्या**	**प्रतिशत**
समाचार पत्र/पत्रिकाएँ	09	4.5
यात्रा पत्रिकाएँ	43	21.4
यात्रा पुस्तकें	81	40.3
प्रिंट मीडिया में विज्ञापन	18	9.0
इलेक्ट्रॉनिक्स मीडिया में विज्ञापन	19	9.4
वेब साइटें	58	28.9
पर्यटक प्रचार प्रदर्शनियाँ	01	0.5
टूर ऑपरेटर	30	14.9
भारतीय पर्यटक कार्यालय	08	4.0
भारतीय दूतावास	04	2.0
दोस्त और रिश्तेदार	76	37.8
अन्य	36	17.9
कुल	383	190.6

नोट: एकाधिक प्रतिक्रियाओं के कारण प्रतिशत 100 तक नहीं जुड़ते हैं। 201 पर्यटकों से 383 प्रतिक्रियाएँ मिलीं।

46.3 प्रतिशत पर्यटकों के मामले में उत्तराखंड आने का प्रेरक कारक पर्यटक आकर्षण माना गया। उच्च महत्व के कारक धार्मिक और तीर्थ केंद्र (45.3%), स्वास्थ्य/योग की सुविधाएं (24.9%), और दोस्तों और रिश्तेदारों की सलाह (21.4%) थे। प्रेरणा के बताए गए कारकों द्वारा पर्यटकों का वितरण तालिका-4 में दिया गया है।

तालिका-4: प्रेरणा के कारकों द्वारा पर्यटकों का प्रतिशत वितरण

प्रेरणा के कारक	संख्या	प्रतिशत
पर्यटकों के आकर्षण	93	46.3
स्वास्थ्य/योग के लिए सुविधाएं	50	24.9
धार्मिक एवं तीर्थस्थल	91	45.3
शिक्षण संस्थान	13	6.5
किफायती पैकेज की उपलब्धता	05	2.5
ट्रैवल एजेंटों की सलाह	04	2.0
दोस्तों और रिश्तेदारों की सलाह।	43	21.4
प्रचार एवं विज्ञापन	02	1.0
अन्य	24	11.9
कुल	325	161.8

नोट: एकाधिक प्रतिक्रियाओं के कारण प्रतिशत 100 तक नहीं जुड़ते हैं। 201 पर्यटकों से 325 प्रतिक्रियाएँ मिलीं।

उत्तराखंड में पर्यटकों के ठहरने की कुल अवधि 14.8 दिन थी। ठहरने की अवधि का स्थानवार अनुमान तालिका-5 में दिया गया है। चूँकि प्रत्येक पर्यटक द्वारा देखे गए स्थानों की औसत संख्या 3.75 है, प्रत्येक दौरे पर ठहरने की औसत अवधि लगभग 3.95 दिन है।

तालिका-6: विभिन्न स्थानों पर पर्यटकों के ठहरने की अनुमानित औसत अवधि

जगह	**दिनों की संख्या**	**व्यक्तियोंकी संख्या**	**ठहरने की औसत अवधि**
नैनीताल	355	24	14.8
अल्मोडा	141	18	7.8
जागेश्वर	12	2	6.0
ऋषिकेश	1001	159	6.3
चंबा	5	1	5.0
भटवाड़ी	16	4	4.0
गंगोत्री	290	77	3.8
देहरादून	41	11	3.7

फूलों की घाटी	17	5	3.4
मसूरी	40	13	3.1
कॉर्बेट नेशनल पार्क	6	2	3.0
ग्वालदम	3	1	3.0
कौसानी	21	7	3.0
नौतला	9	3	3.0
रानीखेत	18	7	2.6
बद्रीनाथ	110	43	2.6
हरिद्वार	302	124	2.4
केदारनाथ	101	46	2.2
तपोवन	19	9	2.1
देवप्रयाग	2	1	2.0
गैगी	4	2	2.0
औली	74	38	1.9
उत्तरकाशी	87	48	1.8
हल्द्वानी	5	3	1.7
गोपेश्वर	11	7	1.6
बिनसर	6	4	1.5
गौरीकुंड	3	2	1.5
गौमुख	28	22	1.3
रुद्रप्रयाग	6	5	1.2
बागेश्वर	2	2	1.0
चकराता	1	1	1.0
चमोली	2	2	1.0
घुत्तु	2	2	1.0
रीह	2	2	1.0
श्रीनगर	8	8	1.0
उखीमठ	8	8	1.O
यमुनोत्री	8	8	1.O
पाटल भुवनेश्वर	0	2	0.0
अन्य	204	30	6.8
कुल	2970	753	14.8

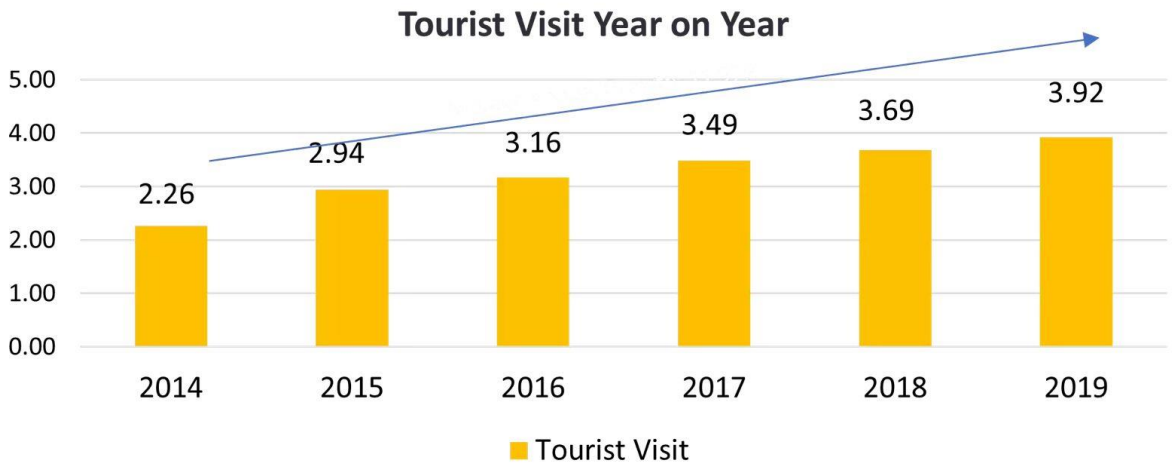

तालिका-7: उत्तराखंड में प्रति पर्यटक प्रति दिन मदवार औसत व्यय

क्रम सं	वस्तु	औसत व्यय (रु.)	प्रतिशत हिस्सेदारी (%)
1	उत्तराखंड की यात्रा	290	12.4
2	उत्तराखंड के भीतर यात्रा करें	310	13.2
3	आवास	821	35.0
4	खाद्य और पेय पदार्थ	465	19.8
5	प्रवेश शुल्क	84	3.6
6	मार्गदर्शक सेवाएँ	40	1.7
7	स्मृति चिन्हों की खरीद	82	3.5
8	अन्य वस्तुओं की खरीदारी	135	5.7
9	मनोरंजन	11	0.5
10	अन्य विविध खर्च	110	4.6
11	कुल	2348	100.0

पर्यटकों द्वारा खर्च किए गए प्रत्येक 100 रुपये में से 35 रुपये आवास पर, 20 रुपये भोजन और पेय पदार्थों पर, 13 रुपये उत्तराखंड के भीतर यात्रा पर और 12 रुपये उत्तराखंड की यात्रा पर जाते हैं। उत्तराखंड से बाहर की यात्रा का खर्च शामिल नहीं किया गया है, हालांकि यह अंदर की यात्रा का खर्च होने की संभावना है। हालाँकि, उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था में आने वाला पर्यटक व्यय आने वाली और जावक यात्राओं पर होने वाले कुल व्यय के आधे से अधिक नहीं हो सकता है।

वीर चंद्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वरोजगार योजना

वीर चंद्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वरोजगार योजना के तहत राज्य सरकार द्वारा बेरोजगार नागरिकों को इलेक्ट्रिक बस खरीदने पर सब्सिडी प्रदान की जाएगी। जिससे वह स्वरोजगार स्थापित कर सकेंगे। इस योजना के तहत उत्तराखंड सरकार द्वारा रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन की

प्रक्रिया आरंभ कर दी गई है। उत्तराखंड के निवासी हैं और इस योजना का लाभ उठाना चाहते हैं। तो आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन पंजीकरण करना होगा।

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा वीर चंद्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वरोजगार योजना की शुरुआत की गई है। वीर चंद्र सिंह गढ़वाली पर्यटन योजना के तहत राज्य के बेरोजगार नागरिकों को पर्यटन के क्षेत्र में स्वरोजगार स्थापित करने के लिए लोन पर सब्सिडी राशि का लाभ दिया जाएगा। इस योजना के तहत उत्तराखंड राज्य के प्रत्येक नागरिक लाभ उठा सकते हैं। राज्य के बेरोजगार युवाओं को अपना स्वयं का पर्यटन संबंधी रोजगार शुरू करने के लिए इलेक्ट्रिक बस या अन्य कोई भी वाहन खरीदने पर वाहन लोन पर सब्सिडी प्रदान की जाएगी।

वीर चंद्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वरोजगार योजना के तहत सरकार द्वारा गैर वाहन लोन के लिए कई तरह के प्रयोजन हेतु पहाड़ी क्षेत्रों के लिए 33% या अधिकतम 15 लाख रुपए की सब्सिडी प्रदान की जाएगी। वहीं मैदानी क्षेत्रों के लिए वाहन ऋण के तहत 25% या अधिकतम 10 लाख रुपए की सब्सिडी प्रदान की जाएगी। जिससे बेरोजगार युवा इस योजना के माध्यम से अधिक से अधिक संख्या में स्वरोजगार के अवसर प्राप्त कर सके। Veer Chandra Singh Garhwali Paryatan Swarojgar Yojana का लाभ प्राप्त करने के लिए उम्मीदवारों को आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करना होगा।

उत्तराखंड सरकार द्वारा वीर चंद्र सिंह गढ़वाली पर्यटन प्रोत्साहन योजना को शुरू करने का मुख्य उद्देश्य राज्य के बेरोजगार युवाओं को अधिक से अधिक स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध करना है। जिसके लिए बेरोजगार युवाओं को पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने हेतु राज्य सरकार द्वारा इलेक्ट्रिक बस या अन्य किसी भी प्रकार के वाहन को खरीदने पर सब्सिडी प्रदान की जाएगी। ताकि कोई भी नागरिक आसानी से पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार शुरू कर सकें। जिससे न केवल बेरोजगारी दर में कमी होगी बल्कि पर्यटन सेवा में भी सुधार होगा।

वीर चंद्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वरोजगार योजना के लाभ

वीर चंद्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वरोजगार योजना के माध्यम से राज्य के बेरोजगार नागरिकों को पर्यटन के क्षेत्र में अधिक से अधिक रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे।

इस योजना के माध्यम से राज्य के लोगों को रोजगार उपलब्ध होने से किसी दूसरे राज्य या शहर जाने की आवश्यकता नहीं होगी।

वीर चंद्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वरोजगार योजना के माध्यम से राज्य के लोग आसानी से खुद का रोजगार शुरू कर सकते हैं।

इस योजना के द्वारा राज्य के बेरोजगार नागरिक इलेक्ट्रिक बस खरीद कर खुद का रोजगार शुरू करने में सक्षम होंगे।

वीर चंद्र सिंह गढ़वाली पर्यटन योजना के तहत वाहन खरीदने पर सब्सिडी प्रदान की जाएगी।

यह योजना राज्य में पर्यटन सेवा में सुधार करेगी जिससे अधिक मात्रा में पर्यटक राज्य में आना शुरू हो जाएंगे।

इस योजना के माध्यम से राज्य के लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाया जा सकेगा और बेरोजगारी दर में भी कमी होगी।

इस योजना का लाभ खास तौर पर उन लोगों को मिल सकेगा जिनके पास रोजगार का कोई साधन नहीं है।

निष्कर्ष :-

उपरोक्त विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यहां पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं क्योंकि इस स्थान पर हर साल बड़ी संख्या में पर्यटक आ रहा है। इसका श्रेय कई अनगिनत कारकों को दिया जा सकता है जैसे प्राकृतिक प्राकृतिक परिदृश्य, स्वास्थ्यप्रद जलवायु, ऐतिहासिक और पुरातत्व स्थल, सांस्कृतिक और धार्मिक स्थल, कुछ विशिष्ट खेल गतिविधियाँ, व्यंजन और पाककला कुछ प्रमुख आकर्षण कारक हैं। राज्य में घरेलू और विदेशी पर्यटक काफी अच्छी संख्या में आते हैं, लेकिन अंतरराष्ट्रीय पर्यटक केवल कुछ सीमित स्थानों या जिलों तक ही सीमित हैं, इसका कारण यह हो सकता है कि कई स्थल अभी भी अप्रयुक्त हैं, सरकार को इस दिशा में कदम उठाने की जरूरत है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार, प्रत्येक गंतव्य के लिए अच्छी बुनियादी सुविधाएं प्रदान करने का आश्वासन देते हुए एक विस्तृत मास्टर प्लान विकसित करना, क्योंकि यह किसी स्थान को आकर्षक बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, लोगों को स्थानीय समुदायों के विकास के लिए पर्यटन के लाभों के बारे में जागरूक करना। सरकार और स्थानीय समुदायों दोनों को यह सुनिश्चित करने के लिए मिलकर योगदान देना होगा कि विकास के दौरान पर्यावरण जागरूकता, स्थिरता और लाभप्रदता के बीच संतुलन की स्थिति बनी रहे।

उत्तराखंड की आर्थिक प्रगति में पर्यटन का बहुत महत्व है। पर्यटन उद्योग के विकास के साथ ही साथ, और भी कोई विकास हो सकता है। जैसे कि होटल, रिसॉर्ट, रेस्तरां, और परिवहन सेवाओं का विकास होगा, जिसे नए रोजगार के अवसर मिलेंगे। साथ ही, स्थानीय हस्तशिल्प, ट्रैकिंग, और साहसिक खेल जैसे गतिविधियाँ भी बढ़ेंगे, जैसे स्थानीय लोगों को भी रोजगार मिल सकता है। इसके अलावा, बुनियादी ढांचे के विकास, पर्यावरण संरक्षण, और सांस्कृतिक संरक्षण के लिए भी नये अवसर होंगे। कुल मिलाकर, पर्यटन की वजह से उत्तराखंड में लोगों को रोजगार का मौका मिल सकता है और आर्थिक प्रगति हो सकती है।

स्वरोजगार के द्वारा लोग अपना-अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अपना जुनून और हुनर पर अधारित काम कर सकते हैं। इस लोग अपने आप को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बना सकते हैं और अपनी रचनात्मकता को व्यक्त कर सकते हैं। स्वरोजगार के माध्यम से लोग अपने कौशल और प्रतिभा को बेहतर तरीके से आगे बढ़ा सकते हैं और अपने आप को सम्मान और सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इसके साथ ही, स्व-

रोजगार के अवसर स्थानीय समुदायों को भी आर्थिक रूप से मजबूत बनाते हैं और उन्हें अपने आस-पास के विकास में योगदान देती है। कुल मिलाकर, स्व-रोज़गार एक प्रशिक्षण और आकर्षक विकल्प है जिसे लोग अपना रोजगार बना सकते हैं और अपने सपने को पूरा कर सकते हैं।

सुझाव एवं उपाय :-

1. उत्तराखंड राज्य में पर्यटकों की आमद को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन स्थल का नियोजित विकास किया जाना चाहिए, जिससे क्षेत्र की राजस्व आय में वृद्धि होगी और उन स्थलों का भी विकास किया जा सकेगा जहां विकास की संभावना है।
2. कुशल सार्वजनिक परिवहन प्रणाली विकसित की जानी चाहिए जो पर्यटन स्थलों को प्रमुख शहरों, रेलवे स्टेशनों और हवाई अड्डों से जोड़े।
3. विभिन्न सरकारी एजेंसियों के बीच अच्छी तरह से समन्वित प्रणाली विकसित की जानी चाहिए और नियमित रूप से निगरानी की जानी चाहिए ताकि उनके समन्वय से पर्यटन विकास की गुंजाइश बन सके।
4. पर्यटन स्थलों के संरचनात्मक विकास के लिए स्थानीय समुदाय को पर्यटन योजना में भागीदारी के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
5. सरकार द्वारा इसमें योगदान देने वाले संबद्ध हितधारकों के बीच आधुनिक सुविधाओं के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए
6. उत्तराखंड सरकार को पर्यटन क्षेत्र में उद्यमिता कार्यक्रम शुरू करने की सलाह दी जा सकती है। इससे स्थानीय लोगों को व्यवसाय शुरू करने के लिए सही मार्गदर्शन और प्रशिक्षण मिल सकता है।
7. स्वरोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए, सरकार को वित्तीय सहायता योजनाओं को बढ़ावा देना चाहिए। ऐसी योजनाएं जैसे ऋण, अनुदान, और सब्सिडी स्थानीय लोगों को व्यवसाय शुरू करने में मदद कर सकते हैं।
8. कौशल विकास कार्यक्रम और व्यावसायिक प्रशिक्षण को बढ़ावा देना चाहिए। इस स्थानीय लोग पर्यटन क्षेत्र में अपने कौशल को बढ़ाकर स्वरोजगार के लिए तैयार हो सकते हैं।
9. उत्तराखंड सरकार को पर्यटन स्थलों और स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए विपणन और प्रचार अभियानों को बढ़ावा देना चाहिए। इसे स्थानीय उद्यमियों को एक्सपोजर और ग्राहक मिल सकते हैं।
10. उत्तराखंड में स्वरोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए, सरकार को अवसंरचना विकास पर ध्यान देना चाहिए। इसमें सड़कें, परिवहन, संचार और बुनियादी सुविधाओं का विकास शामिल है। अच्छा इंफ्रास्ट्रक्चर स्थानीय उद्यमियों के लिए व्यवसाय की वृद्धि और पहुंच बढ़ सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची :-

1. Ghosh. (1998). Tourism and Travel Management. Publishing House Pvt Ltd.
2. Joshi, B. (2016, September). "Tourism Development in Uttarakhand: Scope and Challenges". Uttarakhand Socio-Economic Mirror, Quarterly Bulletin, DES, GoUK, Theme: Uttarakhand Tourism, 1.p.20.
3. Bisht, A.S. "Tourist Arrival in Uttarakhand, "Uttarakhand Socio-Economic Mirror", Quarterly Bulletin of the DES, GoUK, Vol1, No2, Sept. 2016, Pg.22-23.

4. Uttaranchal- A state on the move, (Dehradun: Department of Information and Public Relation, 2006), pg. 27-35.
5. Tourism Policy 2008, Dehradun: Uttrakhand Tourism Development Board, 2008.
6. Himadri Phukan (Sep. 2014), A Study on Tourism Logistics in the Spiritual Sites of Haridwar and Rishikesh in Uttarakhand, International Journal of Emerging Technology and Advanced Engineering, Vol 4, Issue 9, pp 165-170
7. "Madhya Pradesh now fastest growing state, Uttarakhand pips Bihar to reach second". The Indian Express. 8 September 2014
8. Kala, Chandra Prakash (June 2014), Deluge, disaster and development in Uttarakhand Himalayan region of India: Challenges and lessons for disaster management, International Journal of Disaster Risk Reduction, Vol 8, pp 143-152
9. Mahar, Sanjay Singh; Bagri, S. C. (2010), Tourism in the Himalayas: An Evaluation of Tourist Perception, Expectation Quotient and Satisfaction Level in the Bhilangana River Valley of Uttarakhand State, Journal of Tourism , Vol. 11 Issue 1, pp 21-4
10. गुप्ता, पी. दास (2004), पर्यटन एक अध्ययन मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ संख्या 64-66
11. प्रदीप कुमार गर्ग (2016), पर्यटन उद्योग की अवधारणा एवं उत्तर प्रदेश के पर्यटन उद्योग में रोजगार की संभावनाओं का अध्ययन, Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika, Vol 4, Issue 4, pp 79-84
12. नेगी, जगमोहन (1999), पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धांत, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 78
13. किरौला, उदय, एवं कंठनिया, संजय, उत्तराखंड एक अध्ययन, प्रतियोगिता साहित्य सीरीज, साहित्य भवन, आगरा, 2008, पृष्ठ संख्या, 143
14. विनसर उत्तराखंड ईयर बुक , उत्तराखंड का गौरव 2023 ISSN:2348-2230 पृष्ठ सं॰ 444-445
15. उत्तराखंड कल्याणकारी योजनाएँ परीक्षावाणी उत्तराखंडः एक समग्र अध्ययन , केसरी नंदन त्रिपाठी
16. उत्तराखंडः प्रमुख नगर, पर्यटन एवं धार्मिक स्थल परीक्षावाणी उत्तराखंडः एक समग्र अध्ययन , केसरी नंदन त्रिपाठी
17. www.Uttarakhand tourism Industry.com
18. www.VCSGSY uttrakhand.com
19. https://msy.uk.gov.in/frontend/web/index.php
20. 'Yuva U'khand App' To Boost Self-Employment
21. Official website of DEPARTMENT OF RURAL DEVELOPMENT Government of Uttarakhand.(RSETIs)
22. https://uttarakhandtourism.gov.in/digital